

सन्पादकीय

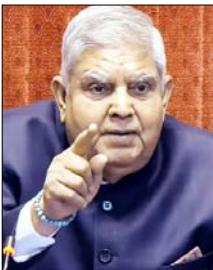
बुधवार, 23 अप्रैल 2025

दुर्बे पर सुनवाई

मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट भाजपा संसद निश्चिकांत दुर्बे के खिलाफ आगे हफ्ते सुनवाई करने के लिए तैयार हो गया है। इसकी अभी तारीख तय नहीं की गई है। सुप्रीम कोर्ट में दुर्बे के खिलाफ कई याचिका दायर की गई हैं निश्चिकांत दुर्बे अपने 19 अप्रैल को दिए गए अपने वयान को लेकर राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बने हुए हैं। जिसमें उन्होंने कहा था कि देश में गृहयुद्ध के लिए सीज़आई संजीव खना और धार्मिक युद्ध भड़काने के लिए सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है। उनकी यह टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट के आठ अप्रैल को दिए एक आदेश को लेकर आई थी। आगे उन्हें कहा था कि सीज़आई ने गृहयुद्ध परियोग को लेकर आगे उन्हें कहा था कि विल सीज़आई भी फैसला लेना होगा। उनके बाद से कई याचिकाएं दुर्बे के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में दायरिल की गई हैं। 20 अप्रैल को पूर्व आईपीएस अधिकारी रहे अमिताभ ठाकुर ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की और मांग की कि उनके वयानों को अपाधिक दायर में लाया जाए। उनसे पहले सुप्रीम कोर्ट के वकील नंदें मिश्र ने लेटर पिटिशन दायर कर आवामना करावाई शुरू करने का आग्रह किया था। इन दोनों के अलावा सुप्रीम कोर्ट के वकील अनस तनवीर और शिव कुमार प्रियांता ने अटानी जनरल को चिट्ठी लिखकर अपाधिक आवामना कार्यवाही शुरू करने की अनुमति मांगी थी। निश्चिकांत दुर्बे ने जो वयान दिया है वह कोई पहली बार नहीं है सच तो यह है कि वह अपने विवादित वयानों को लेकर ही अन्तिम बार होता है लेकिन तजा यामाल में व अपनी हाथों से कुछ ज्ञाना ही आगे निकल गए है और उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश को ही अपने निशाने पर ले लिया है। भल ही भाजपा दुर्बे के वयानों से अपने आप को अलग बता रही है और यह उनका व्यक्तिगत वयान बताकर पल्ला झाड़ रही है, लेकिन इससे कोई बहुत ज्ञाना फर्क नहीं पड़ने वाला। बात के बाल निश्चिकांत दुर्बे की नहीं है बल्कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनराज दुर्बे की आलोचना करने में पीछे नहीं रहे हैं। सबवतः यह भारत के इतिहास में पहला अवसर होगा जब सर्विधान के उच्च पद पर बैठे व्यक्ति ने सुप्रीम कोर्ट पर ऐसी टिप्पणी की है। जाहिर है इस तरह कि टिप्पणी एकाएक नहीं की जा सकती और यह एक सोची समझी की निशाने पर बैठे व्यक्ति के निशाने है। तभी तो निशाने पर बैठे व्यक्ति के कई निशाने हैं और यह एक सोची की बाजारी के बचाव में भाजपा के कई नेता खुलासे दायर कर रहे हैं। वह कितना आहत है इसका अनदाजा उस याचिका पर सुनवाई से लगता है। जो वकील विष्णु हरि जैन ने मुशिदाबाद में हुई हिंसा को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर की जिसमें वहां राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की गई है। इस पर कोटे ने कहा कि हम भला राष्ट्रपति को आदेश कैसे दे सकते हैं। हम पर तो पहले ही यह आरोप लग रहा है कि हम कार्यपालिका के मामले में दखल दे रहे हैं। ऐसा नहीं है कि कोटे के फैसलों की आलोचना नहीं कि जो सकती है बेशक की जा सकती है। लेकिन उसकी एक मर्यादा तो होनी ही चाहिए।

लोकतंत्र में नागरिकों की केंद्रीय भूमिका

किसी भी लोकतंत्र में नागरिकों की केंद्रीय भूमिका होती है और वे जपरिनिधियों की माध्यम से अपने इच्छा व्यक्त करते हैं, में अनुसार नागरिक सर्वोच्च है, क्योंकि एक राष्ट्र और लोकतंत्र नागरिकों द्वारा ही निर्मित होते हैं, उनसे से प्रत्येक को अपनी भूमिका है, लोकतंत्र की आत्मा प्रत्येक नागरिक में उत्पन्न होती है, और धरकी है, जब नागरिक सर्वांगी योगदान देता, तो लोकतंत्र खिलाए, इसके मालव बढ़ते और नागरिक जो योगदान देता है, उसको कोई विकल्प नहीं है, सर्विधान के अनुसार हम, भारत के लोग सर्वोच्च शक्ति उनके पास है।

जगदीप धनराज
उपराष्ट्रपति

गणतंत्र बचाने की अपील की नौबत क्यों आई

जो पाल में तेजी से घटित गणतंत्रिक उथल-पुथल के बीच भले ही गणतंत्र समर्थक दल एक हो रहे हों लेकिन तभी ऐसे सबल मुह बाप खड़े हुए जिसका जबाब लोकतंत्र बहाली के बाद से लेकर आज तक की सकार का पास नहीं है। हैरान है 2008 से लेकर अब तक 13 लोकतंत्रिक सरकार नेपाल में सर्वांगी योगदान के बाबत अपेक्षित करने में विफल रहीं। नेपाल इस वक्त तेजी से हो रहे पलायन, महगे इताज के अभाव में बढ़ रही युवा, प्राचीन संस्कृत और चड़ासी देशों से लोकों पर्यावरण को लेकर जूँझ रहा है। इस ओर ओरी सरकार का ध्यान नहीं है। प्रमुख माओवाही नेता प्रबंध के नेतृत्व में पहली लोकतंत्रिक सरकार हो जा आज की ओरी सरकार, सबके सब जोड़ देकर किसी तरह सत्ता बचाए रखने की युगा गणित में ही व्यस रहे हैं।

यह अचरज ही है कि दुनिया में जहां कहीं भी राजतंत्र के बाबा लोकतंत्र के उदय हो जाए तो यह आपने प्रतिनियोगी लोकतंत्र के समर्थकों से खुश नहीं है। वह अकोशित हैं और तीसरों विकल्प की तलाश में भी है। नेपाली कांग्रेस जो राजनीति के जमाने से ही सत्ता की प्रभुत्व के बिन्दु रही, वह भी अब कुंद पड़ गई है। इसके तमाम बड़े नेता गंभीर आपाधिक मुकदमों में फैले हुए हैं। कोइराला परिवार के हाथ में जबतक इस पार्टी का कमान था तब तक विश्व के राजनीतिक फलक पर नेताओं को अलग हो सकता थी। अब इस पार्टी का इकावाल पहले जानी रही है। इस पराया ने जेनरल के बाबत विश्वास खो दी है। इस पार्टी की औकात बस यही है कि यह किसी को समर्थन देकर सरकार गिरा सकती है, पोखरा से लेकर काठमांडू तक उनका भव्य स्वागत



2008 से लेकर अब तक 13 लोकतंत्रिक सरकार नेपाल में जातान्त्र हुई और सब के लिए दर्शक होता है।

इस वक्त तेजी से हो रहे पलायन, महगे इताज के अन्तर्गत तेजी से हो रहे राष्ट्रपति को लेकर आज की ओरी सरकार, सबके सब जोड़ देकर किसी तरह सत्ता बचाए रखने की युगा गणित में ही व्यस रहे हैं।

आंकड़े नये की गिरपत में आ रहे युवा, वेतनाशा महगाई बोरोजगारी आटा को लेकर जूँझ रहे हैं।

पिछले कुछ सालों से नेपाली कांग्रेस की शिनाऊरी है।

एक नहीं तीन तीन बार विश्वास पर खारा नहीं उतरे। ऐसे में द्रविंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं को लेकर जूँझ रहे हैं।

वाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा हाने की कोशिश कर रहे हैं। नेपाल की इस हिंदुवादी पार्टी की विश्वासी राष्ट्रपति को लेकर जूँझ रहे हैं।

को जानता है कि विश्वासी राष्ट्रपति को लेकर जूँझ रहे हैं।

मीजूरा सरकार से जनता रहते हैं, सरकार को विश्वासी को जानता है कि विश्वासी पर आपाधिक मांग को लेकर जूँझ रहे हैं।

नेपाल के बुद्धाशास्त्र नेताओं को लेकर जूँझ रहे हैं।

विश्वासी राष्ट्रपति को लेकर जूँझ रहे हैं।

जनता नाराज हैं लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

किसी गया विश्वासी की वापसी हो रही है।

लेकिन इसे राजतंत्र की वापसी की दृष्टि

